शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भागवत इत्यादि चित्रों में कलाकार एस० एम० पंडित का योगदान

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

23

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

शिवांशी लोध
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सारांश

भारतीय चित्रकला में पौराणिक कथाओं, भागवत, अध्यात्म, आदि का महत्व रहा है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन काल तक भारतीय चित्रकला के विषयों में भागवत, पुराण, अध्यात्म, आदि का योगदान रहा है। यह भी कह सकते हैं कि भारतीय चित्रकला में बहुत से चित्रकारों ने अपने कला के विषयों के लिए पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक प्रसंग, भागवतपुराण आदि के विषयों का सहारा लिया है। भारतीय चित्रकारों में से एक प्रसिद्ध चित्रकार एस.एम. पंडित भी हैं, जिन्होंने अपनी चित्रकला के लिए भागवत, पौराणिक प्रसंग, आध्यात्मिक विषयों का चयन किया। एस.एम. पंडित ने यथार्थवादी शैली में चित्रण करकेउन ऐतिहासिक प्रसंग को जैसे सजीवता प्रदान की। समकालीन कला में जहां चित्रकारों ने अमूर्त कला को चुना और अपने चित्रण को प्रस्तुत किया वहीं एसएम पंडित ने समकालीन कला में भी यथार्थवादी चित्रण का चयन किया। पंडित जी ने इतनी सुंदर वह यथार्थवादी आध्यात्मिक चित्रण किया जिनकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। केवल आध्यात्मिक चित्रण ही नहीं बल्कि विभिन्न तरह के अनगिनत चित्रण एसएम पंडित द्वारा किए गए जो की उतने ही यथार्थवादी व सुंदर है जितने आध्यात्मिक चित्रण है। चित्रकारों ने भागवत, पुराणों, पौराणिकग्रंथोंका अध्ययन करके ही उसका चित्रण कर उसके चरित्रों को हमारे सामने प्रस्तुत किया। उन पौराणिक कथाओं व उनके चरित्रों का एक स्वरूप हमारे सामने रखा। यह उन चित्रकारों द्वारा एक बड़ा योगदान है।

मुख्य बिन्दु

भागवत, पौराणिक कथा, आध्यात्मिक, यथार्थवादी कला।

भारतीय यथार्थवादी चित्रकारों में शामिल एस.एम. पंडित एक मुख्य चित्रकार थे। इनकापूरा नाम है 'साम्बानंद मनप्पा पंडित'। इनका जन्म 25 मार्च 1916 को कर्नाटक में हुआ। एस.एम. पंडित के अधिकांश चित्रण विषय रामायण, महाभारत, पुराणों औरभारतीय साहित्यिक घटनाओं पर आधारित

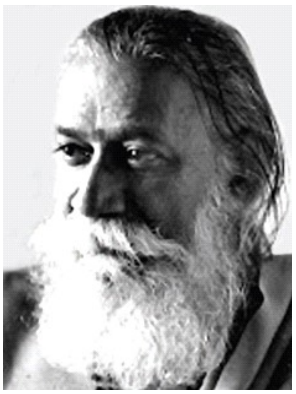

थे। आध्यात्मिक चित्रण विषयों के साथ–साथ राधा कृष्ण, नल दमयंती और विश्वामित्र मेनका जैसे रोमांटिक पात्रों के चित्र भी बनाएं। यही नहीं उन्होंने कई नायक और नायिकाओंके भी चित्र बनाएं। पंडित जी ने कई लोकप्रिय फिल्म पोस्टर पत्रिकाओं और विभिन्न अन्य प्रकाशनों को भी चित्रित किया जिन्हें सामूहिक रूप से कैलेंडर कला कहा जा सकता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के विषय के यथार्थवादी चित्रण के लिए उन्हें भारतीय कैलेंडर उद्योग में व्यापक रूप से माना जाता है। अपने इन चित्रों के माध्यम से इन्होंने भारतीय चित्रकला के पारंपरिक और शास्त्रीय शैलियों के विपरीत नायकोदृनायको, देवी–देवताओं के भौतिक रूप पर जोर दिया।

एस.एम. पंडित माइकल एंजेलो, रूबेंस और राजा रवि वर्मा जैसे यूरोपीय कलाकारों के कार्यों से प्रभावित थे। अपनी कला शिक्षा में ग्रसित होकर उन्होंने 14 साल की उम्र में मद्रास स्कूल आफ आर्ट से डिप्लोमा प्राप्त किया। अपनी शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ते हुए वह मुंबई आए और श्री जी एस दंडवीमत के मार्गदर्शन में नूतन कला मंदिर में शामिल हुए और डिप्लोमा प्राप्त किया। इन्होंने जेजे स्कूल ऑफ आर्ट से डिप्लोमा प्राप्त किया। यह वहां के तत्कालीन कला निर्देशक कैप्टन सी ग्लैडस्टोनसे बहुत प्रभावित थे। जेजे स्कूल आफ आर्ट में एसएम पंडित के प्रधानाचार्य प्रसिद्ध कलाकार एम.बी. धुरंधर थे। जिन्हेभारतीय पौराणिक कथाओं, इतिहास और शास्त्रीय साहित्य के दृश्यों को चित्रित करने के लिए प्राकृतिक तकनीक के उपयोग के लिए जाना जाता था। बी धुरंधर जी को एक शैली राजा रवि वर्मा से विरासत में मिली और वही शैली एसएम पंडित को धुरंधर जी के अंतर्गत अध्ययन करने से प्राप्त हुई। पंडित जी ने अपना डिप्लोमा डिस्टिंक्शन से प्राप्त किया। यह कहना गलत नहीं होगा कि पंडित जी को 'प्रकृतिवादी' और 'यथार्थवादी' शैली राजा रवि वर्मा से विरासत में मिली।

एस.एम. पंडिततेल माध्यम में कार्य करते थे। तेल माध्यम के साथ–साथ उन्होंने पोस्टर रंगों के माध्यम में भी कार्य किया। पंडित जी पहले भारतीय चित्रकार रहे जिन्होंने पोस्टर रंगों से कार्य किया। पोस्टर रंगों में भी वह अपने रंग मिश्रण तकनीक, रगों में पारदर्शिता के कारण बहुत प्रसिद्ध रहे। यह अपनी अद्वितीय कौशल और चित्रात्मक रचना में महारत थे। पंडित जी को 'टूलूजलौट्रेक'के रूप में जाना जाता था। फिल्मी सितारों के चित्रण किया जो कैलेंडर के रूप में मुद्रित हुए। पंडित जी ने अपने यथार्थवादी चित्रण से युवा पीढ़ी को प्रभावित किया और जिस कारण नए कलाकार भी इसी यथार्थवादी शैली को सीखने लगे। भारत में भागवत, रामायण, प्राचीन साहित्य आदि का एक अलग महत्व है और जब पंडित जी ने इन विषयों पर विशाल सुंदर यथार्थवादी चित्रण किया तो लोगों को इन्होंने आकर्षित

किया। पंडित जी ने पोस्टर के व्यवसाय के साथ–साथ कैलेंडर और फिल्म कला में अपनी पहचान बनाई। एसएम पंडित ने शोकार्ड प्रिंट किया तो कभी फिल्म के पोस्टर बनाएं।

1944 में मुंबई में एसएम पंडित नामक स्टूडियो स्थापित किया। अन्य समकालीन कलाकारों के साथ एसएम पंडित ने कैलेंडर कलयुग की कई हिंदू धार्मिक छवियों को बाद में पूर्ण या आंशिक रूप से वर्तमान हिंदुत्व प्रचार द्वारा अपनाया और नव प्रवर्तित किया। पंडित जी की उत्कृष्ट कृतियों में कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानंद का आदम का चित्र है। पंडित जी के प्रख्यात चित्र महाभारत, साहित्यिक प्रसंग, पौराणिक कथाओ के आधार परचित्रित किए गए हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और मार्गरेट थैचर और सद्दाम हुसैन जैसे प्रमुख व्यक्तियों के भी चित्र बनाएं। विभिन्न माध्यमों से हजारों कार्यों में पंडित जी के सांसारिक गुण अनेक है। पंडित जी को पंडित जी को कई समकालीनों द्वाराशैलीमें अग्रणी कलाकार के रूप में मान्यता दीगई थी।

पंडित जी को 1944 में टोरंटो में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में एक कवर डिजाइन के लिए पदक से सम्मानित किया गया पूर्ण में राम इन्हें रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स लंदन का फैलो भी चुना गया जो एक भारतीय कलाकार को दी जाने वाली दुर्लभ फेलोशिप है। पंडित जी कमर्शियल आर्टिस्ट गिल्ड, मुंबई के संस्थापक सदस्य थे। इन्होंने लंदन में रायल अकादमी के स्वर्ण पदक प्राप्त कियाहै। 1983 में राज्य ललित कला अकादमी पुरस्कार और 1984 में राज उत्सव पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। पंडित जी को डी.लिट से सम्मानित किया गया था।

1978 में रवि शंकर हॉल और लंदन और मैनचेस्टर में भारतीय उच्चायोग में उनके पौराणिक और चित्रों की प्रदर्शनी में उन्हें लोकप्रिय प्रशंसा दिलाई। न्यूयॉर्क में रोमन आर्ट गैलरी, सेराक्यूज यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में एच. डेनियल स्मिथ पोस्ट आर्काइव और भारत और विदेशों में कई अन्य निजी और सार्वजनिक संग्रह सहित कई महत्वपूर्ण संग्रह में उनकी पेंटिंग, पोस्ट और प्रिंट शामिल है। 30 मार्च 1993 में हमने भारत के एक महान चित्रकार एसएम पंडित को खो दिया। एसएम पंडित एक महान चित्रकार थे जिन्होंने अपने अंतिम समय तक चित्रकला नहीं त्यागी। एस.एम. पंडित की आर्ट गैलरी गुलबर्गा में है जो वर्तमान में उनके पुत्र द्वारा संचालित की जाती है।

कलाकार एस.एम. पंडित ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में यह चित्र बनाना प्रारंभ किया परंतु उनके जीवन ने इस चित्रकला को पूर्ण होने का समय नहीं दिया जिससे यह चित्रकला अपूर्ण रह गई। यह चित्र 1985 में बनाया गया यह 3X5 फुट का है, जो तेल माध्यम में बनाया गया। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी उन्होंने कला को त्यागा नहीं जिससे यहसाबित होता है कि वह एक सच्चे कलाकार थे जिन्होंने अपनी कलाकी आराधना की।

एस.एम. पंडित ने केवल पौराणिक व आध्यात्मिक चित्रण ही नहीं किया, इन्होंने सुंदर व चित्रात्मक व्यक्ति चित्रण भी किए। एस.एम. पंडित द्वारा चित्रित यह डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर का व्यक्ति चित्रण 1981 में तैलीय माध्यम में बनाया गया, जिसका आयाम 18"X24" है।

पंडित जी की अन्य उत्कृष्ट कृतियों में कन्याकुमारी में 'स्वामी विवेकानंद' का आदमकद चित्र है। पंडित जी ने आध्यात्मिक, पौराणिक, व्यक्ति चित्रण के साथ–साथ सिनेमा के कई बड़े सितारों व फिल्मों के पोस्ट भी चित्रित किए।

कलाकार एस.एम. पंडित मुंबई में शिवाजी पार्क के निकट, दादर में रहकर जहां चित्रकला का कार्य करते थे। आज के समय में पंडित जी के सम्मान में मुंबई महानगर पालिका ने उस सड़क का 'चित्रमहर्षि डॉक्टर एस.एम. पंडित चौक' के नाम से नामकरण किया।

निष्कर्ष

आधुनिक काल में चित्रकला का ढंग बदला परंतु भारतीय धार्मिक ग्रंथ, पुराणों के विषय चित्रकला में हमेशा सम्मिलित रहे। चित्रकला की नई–नई विधिओ के साथ–साथ आध्यात्मिक चित्र को बनाने का ढंग भी परिवर्तित होता रहा है। चित्रकार अपने चित्रण की प्रस्तुति के लिए यथार्थवाद, अमूर्त चित्रण, आदि का चयन करता है। भारतीय चित्रकारों में से एक डॉ. एस. एम. पंडित, जिन्होंने अपने यथार्थवादी चित्रण से अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका बनाई। पंडित जी को उसे समय में अग्रणी कलाकार के रूप में मान्यता दी गई और आज भी वह कलाकारों के लिए प्रभावशाली कलाकार हैं। पंडित जी ने धार्मिक, पौराणिक, व्यक्ति चित्रण, आदि को अत्यंत सुंदर व प्रभावशाली बनाया एवं वह चित्र इतने यथार्थवादी चित्रित हुए हैं कि वह सत्य प्रतीत होते हैं। उनकी रचनाएं आज भी अत्यधिक लोकप्रिय है। उनकी पौराणिक पेंटिंग और कैलेंडर कला व्यापक के रूप में एकत्रित की गई है। पंडितजी ने वर्तमान के समय में भी अपनी कला के माध्यम से लोगों को यथार्थवाद की ओर आकर्षित किया और भागवत, पुराण, आदि पर चित्रण कर इन विषयों को लोगों के बीच प्रस्तुत किया। पंडित जी के यथार्थवादी चित्रों ने भारतीय चित्रकला मैं अपना अतुलनीय योगदान दिया।

संदर्भ

1. Http%//en-m-wikipedia-org.
2. Indiaart-com.
3. Facebook ए